राजभाषा रश्मि

अक्टूबर - मार्च, 2025



भा.क.नि.
CCI

भारतीय कपास निगम लिमिटेड

एक मिनी रत्न कंपनी
(भारत सरकार का उपक्रम)
वस्त्र मंत्रालय

THE COTTON CORPORATION OF INDIA LIMITED

A Mini Ratna Company
(GOVERNMENT OF INDIA UNDERTAKING)
MINISTRY OF TEXTILES

राजभाषा रश्मि

संरक्षक



श्री ललित कुमार गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादक मंडल



श्री विजय कुराडगी
निदेशक (विपणन)



श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता
निदेशक (वित्त)



श्री एस. के. पाणिग्रही
मुख्य महा प्रबंधक (विपणन)



श्री तिलक राज तनेजा
मुख्य महा प्रबंधक (वित्त)



संतोष कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

राजभाषा रश्मि

अक्टूबर - मार्च 2025

अनुक्रमणिका

- अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से 01
- निदेशक (वित्त) का संबोधन 02
- संपादकीय 03
- माननीय वस्त्र मंत्री जी का निगम में दौरा 04
- अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं नाट्य मंचन 05
- नराकास पुरस्कार की झलकियां 07
- राजभाषा विभाग द्वारा मुख्यालय का निरीक्षण 09
- वस्त्र मंत्रालय द्वारा मुख्यालय का निरीक्षण 11
- वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा शाखाओं का निरीक्षण 11

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	

1.	डिजिटलीकरण और हिंदी	डॉ. वीरेन्द्र कुमार यादव	16
2.	हिंदी और आधुनिक तकनीक	श्री राजेन्द्र प्रसाद वर्मा	20
3.	भारतीय संस्कृति और लोक परंपराएँ	डॉ. अंजू शर्मा	24
4.	कार्य और जीवन में संतुलनः एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता	श्री अनूप अब्राहम	26
5.	डॉ. राखी सिंह कटियार की हिंदी कविताएं	डॉ. राखी सिंह कटियार	28
6.	मेरे पापा	श्री मोहित कुमार	29
7.	कपास की यात्रा	सुश्री ए. शिखा	30
8.	किसान	श्री नीरज कुमार	31
9.	कपास न होता तो जीवन कैसा होता	सुश्री विभा शर्मा	31
10.	प्रश्न	श्री हर्षदीप सपकाले	32
11.	माँ काफी है	श्री रवि कुमार चकवर्ती	33
12.	कामकाजी महिला	श्री कमल कान्त	34
13.	जिंदगी मुस्कुराने लगी	श्री ललित कुमार	35
14.	दिन जल्दी जल्दी ढलता है	श्री वैभव रघुनाथ इंगले	36
15.	मेरी इच्छा है कि मैं कपास बन जाऊं	श्री वीरेन्द्र सिंह कार्की	36
16.	तुम-सा सदियों के बाद कहीं फिर आएगा	श्री हरिवंशराय बच्चन	37
17.	राष्ट्रीय संदेश वाहक		38
18.	सेवानिवृत्ति		40

रचना के तथ्यों का दायित्व स्वयं रचनाकार का है।



अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि निगम की गृह पत्रिका राजभाषा रश्मि के नए अंक का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया गया है। यह भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दिशा में सराहनीय प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन से न केवल राजभाषा हिंदी को बल मिलता बल्कि कार्मिकों के मौलिक लेखन का भी विकास होता है। पत्रिका के नियमित प्रकाशन से निगम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग प्रसार को बढ़ाने की दिशा में प्रगति हुई है। ऐसे साहित्यिक प्रयासों को बढ़ावा देना निगम की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कार्य है।

भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित सभी लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सदैव निगम का राजभाषा अनुभाग प्रयासरत रहता है। हिंदी संघ की राजभाषा है इसलिए हिंदी का अधिकतम प्रचार एवं प्रसार करना तथा अपने दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का उपयोग करना प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी की जिम्मेदारी है। निगम इस दिशा में सार्थक प्रयास कर राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार में मुख्य भूमिका निभा रहा है।

राजभाषा के प्रति इस समर्पण के कारण निगम हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा रश्मि का यह अंक भी पिछले अंकों की भांति ही आपको रुचिकर लगेगा। पत्रिका हेतु अपनी रचनाओं को भेजने वाले मुख्यालय एवं शाखा कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मेरा अनुरोध है कि वे अपनी मौलिक रचनाएँ तथा लेख निरंतर भेजकर अपना योगदान करते रहें। पत्रिका की उन्नतिशीलता को इसी प्रकार बनाये रखने हेतु सभी का सहयोग अपेक्षित है।

शुभकामनाओं सहित...

ललित गुप्ता

ललित कुमार गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



निदेशक (वित्त) का संबोधन

राजभाषा रश्मि का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।भाषा मनुष्य को ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है। यह भावनाओं और विचारों को एक दूसरे तक पहुँचाने तथा समझने का सबसे बड़ा माध्यम है। किसी भी देश और समाज की पहचान में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत असंख्य भाषाओं, उप भाषाओं, बोलियों, उप बोलियों तथा विविध संस्कृतियों का देश है। ऐसे में राष्ट्र का प्रतिनिधित्व वही भाषा कर सकती है जो देश के सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। जाहिर है कि हिंदी भाषा है जो भारत की सभी भाषाओं का प्रतिनिधित्व कर सकती है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका न केवल निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार का माध्यम है, बल्कि उनके मध्य एकता और संवाद स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही। यह पत्रिका हमारे निगम की संगठनात्मक संस्कृति को और मजबूत बनाएगी। हमारा प्रयास है कि इस अंक में उत्कृष्ट लेख, रचनाओं के माध्यम से हमारे पाठकों को नई रोशनी, नयी सोच, नए कार्य की प्रेरणा मिले जिससे राजभाषा के क्षेत्र में हिंदी को और अधिक बढ़ाने का सुअवसर प्राप्त हो।

शुभकामनाओं सहित...

राजेन्द्र कुमार गुप्ता
निदेशक (वित्त)



संपादकीय

राजभाषा रश्मि का अंक आपको सौंपते हुए हमें बहुत ख़ुशी हो रही है। हिंदी भाषा सम्पूर्ण विश्व में भारत की पहचान है। हिंदी संपर्क की भाषा, बोलचाल की भाषा, व्यापार की भाषा भी है। यह एक ऐसी भाषा है जिसे देश के हर प्रान्त, हर गांव और हर शहर के लोग बोलते हैं और अब तो विदेशी भी अच्छे से समझता है। हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता उसकी समाहार शक्ति है। वह किसी भी भाषा के शब्दों को बिना किसी भेदभाव के अपना लेती है। केवल भारत में ही नहीं पूरे विश्व में हिंदी का वर्चस्व तेजी से बढ़ रहा है।

विश्व में आज विज्ञान और तकनीकी का बोलबाला है। इंटरनेट की पहुँच ने पूरे विश्व के लोगों को हर स्तर पर जोड़ा है। इस विश्वव्यापी जाल की तकनीक ने हिंदी का विस्तार सात समंदर पार तक पहुंचा दिया है। आज गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, आईबीएम, ओरेकल जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हिंदी में अपनी डिजिटल सुविधाओं को सुसज्जित करके और हिंदी में उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करके हिंदी को एक नई दिशा प्रदान की है।'राजभाषा रश्मि आपकी अपनी पत्रिका है। हमें आपके नवीनतम लेख, कहानियों तथा कविताओं का इंतजार रहेगा। कृपया पत्रिका के बारे में आप अपने प्रेरणादायी सुझाव हमें अवश्य दें ताकि राजभाषा रश्मि को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाया जा सके

शुभकामनाओं सहित...

संतोष

संतोष कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

माननीय वस्त्र मंत्री जी का निगम में दौरा

दिनांक 08.12.2024 को माननीय वस्त्र मंत्री श्री गिरिराज सिंह द्वारा निगम के मुख्यालय में दौरा किया गया । निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय, निदेशक (विपणन), निदेशक (वित्त), मुख्य सर्तकता अधिकारी व अन्य अधिकारीगण की उपस्थिती में माननीय वस्त्र मंत्री महोदय ने अपने कर-कमलों से कपास परीक्षण प्रयोगशाला की नई मशीनों का उद्घाटन किया । तत्पश्चात, "एक पेड़ माँ के नाम" के अंतर्गत माननीय वस्त्र मंत्री जी द्वारा वृक्षारोपण किया गया ।



(माननीय वस्त्र मंत्री महोदय द्वारा कपास परीक्षण प्रयोगशाला की नई मशीनों का उद्घाटन करते हुए साथ में निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण)



("एक पेड़ माँ के नाम" के अंतर्गत माननीय वस्त्र मंत्री जी द्वारा वृक्षारोपण करते हुए)



(बैठक के पश्चात समूह फोटो में माननीय वस्त्र मंत्री जी के साथ निगम के सभी उच्च अधिकारीगण)



(माननीय वस्त्र मंत्री श्री गिरिराज सिंह जी के साथ निगम की महिला कार्मिकों का समूह फोटो)

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं नाट्य मंचन

निगम के मुख्यालय में हिंदी के विकास तथा हिंदी कार्य के प्रति अधिकारियों तथा कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता रहा हे। इसी प्रयास को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से दिनांक 27.12.2024 को निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं नाट्य मंचन का आयोजन किया गया । जिसमें निगम के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी तथा उनके परिवारजन के साथ-साथ वीडियों कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से निगम के सभी अधीनस्थ कार्यालयों को भी शामिल किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्या, उप निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नवी मुंबई को आमंत्रित किया गया था। श्री मुजीब खान के निर्देशन में उनके कलाकारों द्वारा श्री रामधारी सिंह "दिनकर" की प्रसिद्ध रचना "रश्मिरथी" नाटक का मंचन किया गया ।



(दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशक (वित्त), निदेशक (विपणन), एवं मुख्य अतिथि)



(कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री संतोष कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा)



(कार्यक्रम के आरंभ में मंच पर विराजमान दायी ओर से उप प्राचार्य बैंक ऑफ इंडिया, उप निदेशक (कार्यान्वयन), निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशक (विपणन), निदेशक (वित्त)



(कार्यक्रम के दौरान अपना अभिभाषण देते हुए श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता, निदेशक (वित्त)



(कार्यक्रम के समापन पर आभार ज्ञापन करते हुए श्री कमलकांत, महाप्रबंधक (अंभनि)



(रश्मिरथी नाटक के निर्देशक श्री मुजीब खान एवं उनके साथी कलाकारों के साथ निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशक (विपणन), निदेशक (वित्त), मुख्य महा प्रबंधक (विपणन), मुख्य महा प्रबंधक (वित्त) एवं मुख्य अतिथि)

नराकास पुरस्कार की झलकियां

मुख्यालय, नवी मुंबई

दिनांक 08 नवंबर, 2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नवी मुंबई द्वारा वर्ष 2023-24 के सर्वोत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु निगम को "द्वितीय पुरस्कार" स्वरूप राजभाषा शील्ड तथा सर्वोत्कृष्ट राजभाषा गृह पत्रिका के लिए "तृतीय पुरस्कार" से सम्मानित किया गया । इस अवसर पर निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं निदेशक (वित्त) नराकास अध्यक्ष के कर कमलों से पुरस्कार ग्रहण किये ।



(राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशक (वित्त) और उप प्रबंधक (राजभाषा)

शाखा कार्यालय हुबली

वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हुबली की ओर से सरकारी समूह वर्ग के अंतर्गत शाखा कार्यालय हुबली को "द्वितीय पुरस्कार" से सम्मानित किया गया ।



(राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए शाखा कार्यालय हुबली के अधिकारीगण)

शाखा कार्यालय औरंगाबाद

वर्ष 2023-24 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाग विभाग की ओर से शाखा कार्यालय औरंगाबाद को जयपुर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन दिनांक 17.02.2025 को श्री भजन लाल शर्मा, माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान के कर कमलों द्वारा "द्वितीय पुरस्कार" से सम्मानित किया गया ।



(राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए शाखा कार्यालय औरंगाबाद के शाखा प्रधान श्री स्वप्नील दडमल)



राजभाषा विभाग द्वारा मुख्यालय का निरीक्षण

निगम के मुख्यालय में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), राजभाषा विभाग, नवी मुंबई की डॉ सुष्मिता भट्टाचार्या, उप निदेशक महोदया द्वारा दिनांक 06.01.2025 को हिंदी कार्यान्वयन की स्थिति का जायजा लेने हेतु निरीक्षण किया गया । मुख्यालय के हिंदी अनुभाग के अतिरिक्त विभिन्न अनुभागों जैसे मासंवि, प्रशासन, अंभनि, प्रोटोकॉल, केंद्रीय लेखा, बैंकिंग अनुभाग इत्यादि में भी हिंदी में हो रहे कार्य का निरीक्षण किया गया ।



(डॉ सुष्मिता भट्टाचार्या, उप निदेशक (कार्यान्वयन) का स्वागत करते हुए श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता, निदेशक (वित्त))



(डॉ सुष्मिता भट्टाचार्या, उप निदेशक (कार्यान्वयन) मासंवि अनुभाग के हिंदी कार्य का निरीक्षण करती हुई)



(डॉ सुष्मिता भट्टाचार्या, उप निदेशक (कार्यान्वयन) अंभनि अनुभाग के हिंदी कार्य का निरीक्षण करती हुई)



(डॉ सुष्मिता भट्टाचार्या, उप निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा प्रोटोकॉल अनुभाग के हिंदी कार्य का निरीक्षण करती हुई)



(डॉ सुष्मिता भट्टाचार्या, उप निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा हिंदी अनुभाग के हिंदी कार्य का निरीक्षण करती हुई)



(डॉ सुष्मिता भट्टाचार्या, उप निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा केंद्रीय लेखा अनुभाग के हिंदी कार्य का निरीक्षण करती हुई)



(डॉ सुष्मिता भट्टाचार्या, उप निदेशक (कार्यान्वयन) साथ में निदेशक (वित्त) तथा हिंदी अनुभाग के अधिकारी व कर्मचारी का निरीक्षण के पश्चात लिया गया समूह फोटो)

वस्त्र मंत्रालय द्वारा मुख्यालय का राजभाषायी निरीक्षण

निगम के मुख्यालय में वस्त्र मंत्रालय की उप निदेशक श्रीमती अंशु गुप्ता महोदया द्वारा दिनांक 16.01.2025 को हिंदी कार्यान्वयन की स्थिति का निरीक्षण किया गया । हिंदी कार्य से संबंधित सभी पहलुओं का बारीकी से निरीक्षण किया गया ।



(राजभाषायी निरीक्षण दौरे पर आयी श्रीमती अंशु गुप्ता, उप निदेशक,(राजभाषा), वस्त्र मंत्रालय का श्री आर .के. गुप्ता, निदेशक (वित्त) पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए)

वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा शाखाओं का राजभाषायी निरीक्षण

शाखा कार्यालय-भटिंडा

शाखा कार्यालय भटिंडा में मुख्य सर्तकता अधिकारी महोदया द्वारा दिनांक 03.10.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । शाखा कार्यालय भटिंडा हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रोत्साहन देने हेतु काफी सराहनीय कार्य कर रहा है ।



(मुख्य सर्तकता अधिकारी महोदया शाखा कार्यालय भटिंडा का राजभाषायी निरीक्षण करती हुई तथा साथ में अधिकारीगण)

शाखा कार्यालय-अकोला

शाखा कार्यालय अकोला में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा दिनांक 05.11.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । शाखा का हिंदी का कार्य काफी प्रशंसनीय पाया गया है।



(अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय शाखा कार्यालय अकोला का राजभाषायी निरीक्षण करते हुए तथा साथ में अधिकारीगण)

शाखा कार्यालय-औरंगाबाद

शाखा कार्यालय औरंगाबाद में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा दिनांक 06.11.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया। शाखा का हिंदी कार्य काफी सराहनीय पाया गया ।



(अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय शाखा कार्यालय औरंगाबाद का राजभाषा हिंदी की स्थिति का निरीक्षण करते हुए साथ में श्री स्वप्निल दड़मल, उप महा प्रबंधक)

शाखा कार्यालय रायगढ़ा

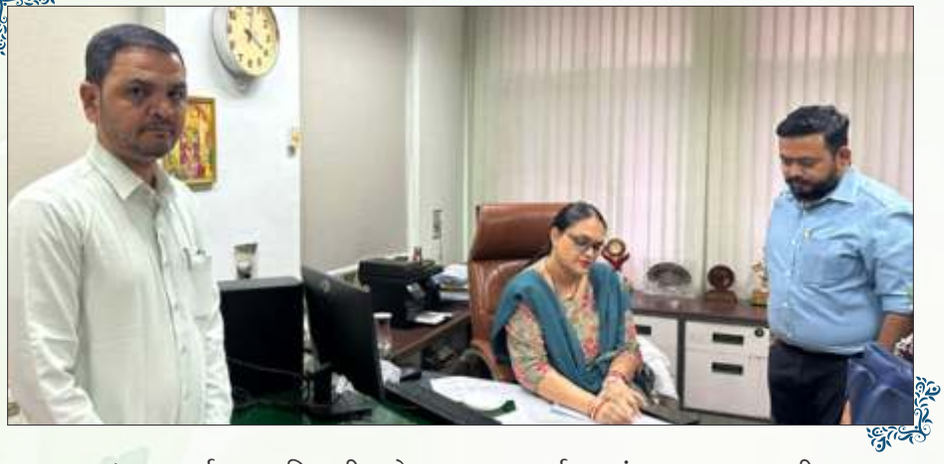
शाखा कार्यालय रायगढ़ा में मुख्य महा प्रबंधक (विपणन) महोदय द्वारा दिनांक 21.11.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । शाखा का हिंदी कार्य संतोषजनक पाया गया ।



मुख्य महा प्रबंधक (विपणन) महोदय शाखा कार्यालय रायगढ़ा का राजभाषा हिंदी की स्थिति का निरीक्षण करते हुए साथ में श्री टी. के. दास, शाखा प्रबंधक और हिंदी सहायक

शाखा कार्यालय गुंटूर

शाखा कार्यालय गुंटूर में मुख्य सर्तकता अधिकारी महोदया द्वारा दिनांक 22.11.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । शाखा कार्यालय गुंटूर का राजभाषा संबंधी कार्य संतोषजनक पाया गया ।



(मुख्य सर्तकता अधिकारी महोदया शाखा कार्यालय गुंटूर का राजभाषायी निरीक्षण करती हुई तथा साथ में शाखा के अधिकारी एवं हिंदी सहायक)

शाखा कार्यालय अकोला

शाखा कार्यालय अकोला में मुख्य महा प्रबंधक (विपणन) द्वारा दिनांक 22.01.2025 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । शाखा का कार्य हिंदी में सराहनीय पाया गया ।



(शाखा कार्यालय अकोला का राजभाषायी निरीक्षण करते हुए मुख्य महा प्रबंधक (विपणन) तथा साथ में श्री नीरज कुमार, उप महा प्रबंधक)

शाखा कार्यालय अकोला

शाखा कार्यालय अकोला में निदेशक (वित्त) द्वारा दिनांक 12.02.2025 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । शाखा अकोला में राजभाषा का कार्य उत्कर्ष पाया गया ।



(शाखा कार्यालय अकोला का राजभाषायी निरीक्षण करते हुए निदेशक (वित्त) तथा साथ में श्री नीरज कुमार, उप महा प्रबंधक एवं अधिकारी गण)

शाखा कार्यालय कोलकाता

शाखा कार्यालय कोलकाता में मुख्य सर्तकता अधिकारी महोदया द्वारा दिनांक 17.02.2025 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । कोलकाता कार्यालय द्वारा राजभाषा में किए जाने वाला कार्य प्रशंसनीय है एवं कर्मचारी गण द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय है ।



(शाखा कार्यालय कोलकाता का राजभाषायी निरीक्षण करते हुए मुख्य सर्तकता अधिकारी महोदया तथा साथ में शाखा के अधिकारी गण)

शाखा कार्यालय वारंगल

शाखा कार्यालय वारंगल में निदेशक (वित्त) द्वारा दिनांक 20.03.2025 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । शाखा वारंगल का राजभाषा संबंधी कार्य सराहनीय पाया गया ।



(शाखा कार्यालय वारंगल का राजभाषायी निरीक्षण करते हुए निदेशक (वित्त) तथा साथ में शाखा के अधिकारी गण)

डिजिटलीकरण और हिन्दी

समस्त विश्व में आदिकाल से ही सूचना का महत्व जाना और माना जाता है। प्रसिद्ध लेखक द्वय (पति-पत्नी) ऐल्बिन तथा हाडी टॉफलर ने सभ्यता की लहरों को तीन चरणों में विभाजित किया है। प्रथम चरण था "कृषि लहर" का जिसमें कृषि व्यवस्था ही प्रधान थी। कृषि लहर को कालावधि सबसे अधिक है क्योंकि यह लहर आदिकाल (लगभग 6000 ई. पू.) से 19वीं शताब्दी तक अर्थात लगभग 7900 वर्ष तक रही। यूरोप में हुई क्रांति ने सभ्यता को दूसरी लहर औद्योगिक लहर को जन्म दिया जिसकी कालावधि 150 वर्ष से कुछ अधिक कही जा सकती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों से इलेक्ट्रॉनिक नामक एक नई विधा ने जन्म लिया जिसने दूर संचार व्यवस्था को एक शक्तिशाली माध्यम दिया। इस नवीन संचार व्यवस्था ने मानव जीवन शैली में ही आमूल-चुल परिवर्तन कर दिया। आधुनिक संचार व्यवस्था का स्वरूप अंकीय (डिजिटल) है जो स्वयं द्विआधारी (बाइनरी) सख्या पर आधारित है। ये द्विआधारी संख्याएँ है शून्य (0) तथा एक (1)। इन नवीन डिजिटल संचार व्यवस्था ने सूचना समाज को जन्म दिया। टॉफलर युगल ने इसे सभ्यता का तीसरा चरण कहा है। यह लहर है "सूचना लहर"।

अंक गणित, विशेष रूप से 1 से 9 तक के अंकों को विश्व समाज अरब देश की देन मानता है। किन्तु स्वयं अरबबासी यह मानते है कि उन्होंने 1 से 9 तक के अंकों को लिखने का ढंग भारत से सीखा है। इन अंको का उपयोग भारतीय व्यापारी अरबों के साथ लेन-देन के समय करते थे। इसलिए अरबी भाषा में अंकों का हिंदसा (हिंदअसा) और अंको की इस प्रणाली को हिसाब हिन्दी कहते हैं। "असा" एक भारतीय का नाम था जिसने अरब व्यापारियों को प्रथम बार इस अंक से परिचित कराया। यूरोप के साथ व्यापार करते समय अरबों ने इसी प्रणाली का प्रयोग किया तो यूरोप वासियों ने इन अको (1 से 9 तक) को अरबवासियों की देन मान लिया।

जब आर्यभट्ट ने विश्व को शून्य (जीरो) अंक दिया तब तो समस्त विश्व में व्यापारिक लेन देन बहुत ही सरल हो गया। गणित, ज्योतिष और ज्यामिति तथा अन्य विज्ञान प्रारम्भ से ही इस अंक विधा का ऋणी रहे है और डिजिटल प्रणाली तो इस पर पूर्ण रूप से आधारित है। मेरे विचार से यदि आर्यभट्ट के काल में पेटेंट प्रणाली प्रचलित होती और यदि भारत ने शून्य का पेटेंट करा लिया होता तो आज सूचना प्रौद्योगिकी के आधे से अधिक आविष्कारों पर भारत का अधिकार होता।

सूचना प्रौद्योगिकी का एक अन्य महत्वपूर्ण आधार है "भाषा"। यदि सूचना किसी ऐसी भाषा में प्राप्त हो जो पाने वाले के लिए अजनबी हो. तो ऐसी सूचना मिलना व्यर्थ ही है। वैसे तो भारत में अनेक भाषाएँ है. किन्तु भारत की संपर्क भाषा हिन्दी है।

किसी देश का सर्वांगीण विकास उस देश की भाषा एवं प्रौद्योगिकी पर निर्भर करता है। एक प्रकार से यह भी कहा जा सकता है कि भाषा प्रौद्योगिकी का विकास पारस्परिक रूप से एक दूसरे पर निर्भर है। इस तथ्य को समझने के लिए हमे जर्मनी, जापान एवं नस जैसे विकसित देशों एवं चीन जैसे तेजी से विकास की और बढ़ते हुए देश की वेबसाइट देखना आवश्यक है इन देशों की अपनी राष्ट्रभाषा है. जिसमें इन्होंने अपनी बेबसाइट की सरचना की है। इनकी वेबसाइट को लाखों व्यक्ति प्रतिदिन देखते है और इनके माध्यम से व्यापार करते है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वैश्विक व्यापार की गति बढ़ने से इनकी भाषा का समुचित विकास होता है। इन देशों के साथ व्यापार करने के लिए

अन्य देशों को भी उनकी भाषा सीखनी पड़ती है। यह उनकी सरकार की नीति है कि उनके उद्योगपति एवं व्यापारी अपनी वेबसाइट अपनी ही भाषा में बनाएँ। हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार चीनी भाषा की वेबसाइट विश्व की विशालतम वेबसाइट बन जाएगी। क्या कभी ऐसी कोई राष्ट्रनीति भारत में भी बन सकेगी।

यह हर्ष का विषय है इंडियन स्टैंडर्ड कोड फॉर इनफॉर्मेशन इंटरवेज (आई.एस.सी.आई.आई.) इस्की नाम से एक ऐसी मानक कूट प्रणाली का विकास किया गया है जिसके अंतर्गत भारतीय भाषाओं और लिपियों के साथ-साथ दक्षिण-पूर्व एशिया एवं यूरोप की विभिन्न भाषाओं सहित रोमन लिपि के लिए विकसित अमरीकन स्टैंडर्ड कोड फॉर इफार्मेशन इंटरबेज (ए.एस.सी. आई.आई.) "आस्की" को भी "इस्की" ने अपना एक घटक बना लिया है। निश्चय ही इस प्रयास से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी सहित समस्त भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ने का रास्ता खुल गया है। अब आवश्यकता है भारतीय राजनेताओं, सरकारी अधिकारियों, उद्योगपतियों तथा शिक्षाविदों को अपनी मानसिकता बदलने की। उर्दू को छोड़कर अन्य भारतीय भाषाओं की लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। ये सभी भाषाएँ अपने मूल स्वरूप में तो अक्षरात्मक है किंतु उनकी वर्णमाला ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) है और उनका क्रम समान है। आई.आई.टी. कानपुर द्वारा भारत सरकार की एक परियोजना के अंतर्गत विकसित ग्राफिक्स एंड स्क्रिप्ट टैक्नोलॉजी (जिस्ट) का एक प्रोटोटाइप विकसित किया गया था। इस प्रौद्योगिकी का समुचित विकास हो चुका है और यह काफी सक्षम एवं समर्थ बन चुकी है।

इंटरनेट के आगमन के पश्चात तो भारतीय भाषाओं की राह और जटिल होती गई। इंटरनेट के माध्यम से कोई भी सामग्री तत्क्षण विश्व के किसी भी कोने में पहुँच सकती थी और पढ़ी जा सकती थी। लेकिन यह कार्य किसी भी भारतीय भाषा में संभव नहीं था। क्योंकि प्रारंभ में यूनिकोड फोन्टस की व्यवस्था अंग्रेजी सहित कई यूरोपीय भाषा तक ही सीमित थी। लंबे समय तक हम भारतीय भाषाओं के लिए यूनिकोड की उपलब्धता की प्रतीक्षा में रहे। उद्योग जगत हो. व्यवसाय जगत हो या सेवा के अन्य क्षेत्र सभी ने अंग्रेजी यूनिकोड को अपना लिया।

इंटरनेट के पसरते जाल को यदि आकड़ों के चश्मे से देखें तो पता लगता है कि विश्व में अंतर्जाल यानि इंटरनेट का प्रयोग करने वालों की संख्या लगभग 3.17 अरब है शारीरिक रूप से अक्षम लोगों की संख्या को घटा दिया जाए तो यह प्रतिशत और बढ़ जाता है। फिर अशिक्षित या आवश्यक कारणों से इंटरनेट तक पहुंच न रखनेवाले लोगों को भी इस संख्या से घटा दिया जाए तो शेष लगभग पूरा विश्व आज इंटरनेट के जाल में आ चुका है। दुनिया के इस प्रबलतम संचार माध्यन से दुनिया समग्रता के साथ जुड़ रही है। 1991 तक एक भी वेबसाइट नहीं थी लेकिन अब करीब 100 करोड़ वेबसाइट रजिस्टर्ड है जो दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। इंटरनेट का नेटवर्क हटते ही तमाम आवश्यक गतिविधियाँ रुक जाती है।

भाषा आज कागजों से निकलकर इंटरनेट की दुनिया में अपना मजबूत आधार बना चुकी है। अब भाषा के प्रसार का पैमाना कागजी दुनिया नहीं बल्कि इलेक्ट्रॉनिक तरंगों की दुनिया है। साहित्य और ज्ञान विज्ञान भी पुस्तकों से निकलकर तेजी के साथ के दायरों से बाहर निकलकर साहित्य ने ई-पत्रिकाओं और सोशल मीडिया पर अपना नया ठिकाना खोज लिया है। यहाँ कोई भी रचनाकार घर बैठे दुनिया के किसी भी कोने में साहित्य-प्रेमियों तक अपनी रचना क्षणभर में निर्वाध रूप से पहुंचा सकता है। यही नहीं अंतरजाल यानि इंटरनेट की दुनिया में बने सोशल मीडिया ने साहित्य जगत को एक महासागर रुपी एक ऐसा अनन्त महासागर बना दिया है जहाँ चौबीसों घंटे साहित्य प्रेमी का रसास्वादन कर रहे है। क्षव्य-दृश्य सुविधाओं से लैस होने के बाग संगोष्ठियों के विकल्प के रूप में भी प्रस्तुत कर रहा

है। अपनी रचनाओं को पाठकों तक पहुंचाने के लिए आवश्यक सीमाओं व प्रकाशकों पर निर्भरता समाप्त हो रही है जिसके चलते साहित्य अल्मारियों में रखी अक्सर धूल खाती पुस्तकों से निकलकर इलेक्ट्रॉनिक तरंगों के रथ पर सवार हो कर देश के कोने-कोने में साहित्य के प्रसार की वाहक बनी हुई है। हालाँकि देश में इस समय हिन्दी ज्ञान विज्ञान और अनेक रूपों में हिंदी की स्थिति का जायजा लेना हो तो हमे दुनिया के अन्य देशों की इंटरनेट पर मुकाबले भारत की उपस्थिति तथा विश्व की दूसरी भाषाओं के मुकाबले भारत की प्रमुख भाषा हिंदी की स्थिति को समझना होगा।

भारत चीन के बाद इस समय इंटरनेट का इस्तेमाल करने वालों की संख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा बड़ा देश है। 30 करोड़ से भी अधिक संख्या के साथ इंटरनेट प्रयोगकताओं में चीन के बाद भारत दुनिया में दूसरे नंबर पर है प्रतिशत की दृष्टि से चीन में 21.07 अमेरिका में 9.58 के बाद 8.33 के साथ भारत तीसरे नंबर पर है और इसकी वार्षिक वृध्दि दर करीब 16 है। लेकिन प्रयोगकर्ताओं के प्रतिशत की दृष्टि से भारत इन देशों में भी सबसे नीचे के पायदान पर है। इंटरनेट का इस्तेमाल करने वालों की संख्या की दृष्टि से भारत विश्व का दूसरा बड़ा देश होने के बावजूद यदि इंटरनेट पर भारत की प्रमुख और विश्व की अग्रणी भाषा हिंदी की स्थिति को देखे तो चौकानेवाले आंकड़े सामने आते है। भाषावार स्थिति देखें तो ज्ञात होता है कि अंग्रेजी 55.5 के साथ शीर्ष पर है और उसके बाद रूसी भाषा 5.9 के केटालन का स्थान है इंटरनेट पर जिसकी सामग्री 0:1 है। लेकिन हिन्दी की स्थिति 0:1 से भी कम है और दुनिया की अनजान सी भाषाएँ भी इस मामले में हिंदी से काफी आगे है। यह स्थिति भी तब है जबकि इंटरनेट का प्रयोग करने के मामले में भारत दूसरे स्थान पर है।

आवश्यकता इस बात की है विश्व की भाषा और उनके बोलने वालों की संख्या के अनुपात में हिन्दी बोलने वालों का तादाद और इंटरनेट पर भारत की प्रभावी उपस्थिति के बावजूद हिंदी और भाषा के साहित्य के पिछडने के कारणों की मीमांसा करते हुए सुधार के उपायों पर विचार किया जाए।

भारत जैसे देश में जहाँ मुश्किल से चार पांच प्रतिशत लोग अच्छी तरह अंग्रेजी जानते हैं। ऐसे में पूरे देश को तमाम सुविधाओं सेवाओं से लाभान्वित के लिए यह आवश्यक है कि ये तमाम सुविधाएँ देश की भाषा में हो और देश के लोग अपनी भाषा में इनका प्रयोग कर सके। लेकिन अंग्रेजी के वर्चस्व और भारतीय भाषाओं में उक्त सुविधाओं के अभाव के चलते आज भी हम इनका समुचित लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

भारत जैसे देश में जहाँ अंग्रेजी जानने वालों की सख्या बहुत कम है और हिन्दी जानने वालों की संख्या बहुत अधिक होने के बावजूद इंटरनेट और सोशल मीडिया पर हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के पिछड़ेपन से एक बात स्पष्ट होती है कि आज भी इंटरनेट का विस्तार मुख्यतः महानगरों व नगरों तक ही है जहां अपेक्षाकृत अंग्रेजी का चलन अधिक है। आज भी देश की अधिकांश जनता इन सेवाओं से दूर है। हालाँकि इस मामले में विश्व में भारत को अग्रिम पंक्ति में लाने के लिए भारत सरकार ने देश में डिजिटल इंडिया योजना प्रारंभ की है। इसी क्रांति को मूर्त रूप देने और भारत के विकास की गति को तीव्र गति प्रदान करने के लिए उठाया गया यह एक महत्वपूर्ण कदम है। डिजिटल इंडिया के माध्यम से सरकार की गाँव-गाँव तक इंटरनेट सर्वसुलभ और उसका अभ्यास करवाते हुए उस भाषा संबंधी कार्य उसका प्रयोग करवाया जाए क्योंकि सभी भारतीय भाषाओं द्वारा साझा रणनीति बनाए जाने की आवश्यकता है।

अब जबकि पूरी दुनिया डिजिटल आकार ले रही है। देश-दुनिया की तमाम सेवाएँ सुविधाएँ धीरे-धीरे

ऑनलाइन होकर अंतरजाल में समा रही है। बहुत कुछ ऑनलाइन हो चुका है और सरकार की डिजिटल इंडिया नीति के चलते ही बहुत कुछ ऑनलाइन होने जा रहा है। बिना इंटरनेट के दुनिया की गाड़ी का पहिया चल नहीं सकेगा। इसलिए यथार्थ को स्वीकार करते हुए यथार्थ की दुनिया से आभासी दुनिया यानि वर्च्युअल वर्ल्ड की तरफ बढ़ते हुए दुनिया का साथ कदमताल करनी होगी। गति के सोपानों को छूने के लिए ज्ञान विज्ञान की नई चुनौतियों और आयामों से तालमेल बनाती आगे बढ़ने के लिए डिजिटलीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी के नवीनतम स्वरूपों को अपनाते हुए हिंदी व भारतीय भाषाओं में इसको करते हुए हिन्दी का समावेश किया जाए। नए युग की आवश्यकताओं को समझते हुए हिन्दी के प्रयोग व प्रसार को उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने के लिए दीर्घकालिक नीति बनानी होगी।

आज भी देश में प्रायः ऐसी व्यवस्था नहीं है कि स्कूल में विद्यार्थियों को कप्यूटर आदि उपकरणों व सूचना प्रौद्योगिकी की शिक्षा देते समय ही हिन्दी व भारतीय भाषाओं में कार्य के लिए नियमित उन्नत एवं वैज्ञानिक इन्सिक्रप्ट कीबोर्ड का प्रशिक्षण दिया जाए। नतीजतन कोई व्यक्ति भले ही उसे अंग्रेजी का अति अल्पज्ञान हो वह भी देखकर रोमन कीबोर्ड की मदद से हिन्दी को भी रोमन में टंकित करता है। इसलिए भारत के सभी स्कूलों में माध्यमिक स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा के अंतर्गत हिन्दी अथवा किसी भी भारतीय भाषा में इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड का विधिवत प्रशिक्षण दिया जाए ।

टेक्स्ट यानि विषय सामग्री को डिजिटल रूप में लाए बिना राजभाषा हिन्दी के प्रयोग और प्रसार को बढ़ाना कठिन ही नहीं वर्तमान दौर में लगभग असंभव सा है। इसलिए मैं यह कहूंगा किसी भी कार्यालय में कोई भी व्यक्ति किसी भी पद पर क्यों न हो उसके लिए आवश्यक है कि वह कप्यूटर आदि पर हिन्दी टंकण कार्य अवश्य सीखे। यदि बड़े अधिकारी जिनके पास टाइपिंग सीखने का समय नहीं है तो वे माइक्रोसॉफ्ट इंडिया इनपुट टूल डाउनलोड करके रोमन लिपि के माध्यम से भी हिन्दी में कर सकते हैं।

सबसे अंतिम बात, हिन्दी के विकास में सबसे बड़ी बाधा यहां के नौकरशाहों और राजनेताओं की हिन्दी विरोधी मानसिकता ही है। माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी कंपनी भी चीन की बात ही छोडिये जब कोरिया और थाईलैण्ड जैसे छोटे से देशों के लिए भी अपने ऑपरेटिंग सिस्टम या सॉफ्टवेयर निकालती है तो उन्हें वहां की स्थानीय भाषा के विकास के विकल्प उपलब्ध करती है। दूसरी और इतने बड़े देश के लिए हिन्दी का विकल्प उपलब्ध नहीं कराने में इतना समय लिया गया। इसकी बजह हमारी सरकारों और उच्च अधिकारियों का उपेक्षापूर्ण रवैया ही है। इसके लिए राष्ट्रीय सोच बनाने की आवश्यकता है एवं मानसिकता बदलने की आवश्यकता है।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार यादव
सदस्य-हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार
अध्यक्ष-अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद, भारत

हिंदी और आधुनिक तकनीक

आज कम्प्यूटर पर हिंदी या भारतीय भाषाओं का सबसे ज्यादा प्रयोग टाइपिंग कार्य के लिए हो रहा है। आज विंडोज के ऑपरेटिंग सिस्टम तथा एम एस ऑफिस सर्वाधिक काम में लिया जा रहा है। आज यूनिकोड की आवश्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आपको जानकारी होगी कि यूनिकोड का आगमन जब हमारे देश में नहीं हुआ था तब हम नॉन यूनिकोड फोंट/सॉफ्टवेयर का प्रयोग करते थे जो कि एक सीमित संख्या में थे. आज यूनिकोड आधारित हिन्दी के ओपन टाइप फोंट किसी भी कंप्यूटर में बड़ी आसानी से खुल जाते हैं और एक कम्प्यूटर से दूसरे कंप्यूटर में फाइलें ओपन करने पर भी टैक्स्ट का फार्मेट वही रहता है। आज यूजर्स की संख्या जैसे-जैसे बढ़ रही है वैसे-वैसे हिन्दी का प्रयोग भी निश्चित रूप से बढ़ रहा है।

आज सोशल मीडिया में आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में हो रही प्रगति को ध्यान में रखते हुए मोबाइल, कंप्यूटर का उपयोग काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज हर एक थोड़ा-सा भी शिक्षित आदमी अपनी भाषा में बोलकर, अपनी भाषा में टाइप कर, अपनी बात दुनिया के किसी भी कोने में पहुंचा सकता है यही है आधुनिक तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता। आज हम देख रहे हैं कि ए.आई. संचार के माध्यम के रूप में एक क्रांति आ गई है। आज इंटरनेट कनेक्टिविटी ने पूरे विश्व को समेट कर रख दिया है।

हमारे देश में उपलब्ध ऑनलाइन सेवाएं दिन-प्रति-दिन उपयोगी साबित हो रही हैं। ऑनलाइन हो या ऑफलाइन बैंक खातों से ट्रांजेक्शन करना अब हर एक को अपनी भाषा में समझ में आ गया है। भाषाएं अब बंधनकारक नहीं है। ज्यादा से ज्यादा लोग इसका उपयोग कर रहे हैं या किसी हेल्प सेंटर के माध्यम से इसका उपयोग करने के लिए जागरुक हो रहे हैं। हाँ यह अवश्य है कि कोई भी टेक्नोलॉजी जब नई-नई विकसित होती है तो उसे समझने में दिक्कत तो होती है लेकिन आज के समय में जो तकनीकी सुविधाएं सरल रूप में हमारे सामने आ रही हैं उन्हें अपनाने में कोई दिक्कत नहीं है। सभी को ऑनलाइन सूचना उपलब्ध कराना, ई-गर्वनेंस, इलेक्ट्रॉनिक डिलिवरी अब सभी कुछ आसान हो गया है। बस आवश्यकता है तो हमें अपने आपको थोड़ा-सा अपडेट करने की। यदि हम चाहते हैं कि हम दूसरों के ऊपर निर्भर न रहें तो हमें आत्मनिर्भर बनना ही होगा। इस आधुनिक तकनीक को अपना कर हम अपना सारा व्यक्तिगत या सरकारी कामकाज अपनी भाषा राजभाषा हिंदी में कर सकते हैं। कहीं किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं है।

सरकार द्वारा किए जा रहे सराहनीय प्रयासों के साथ-साथ अब निजी संस्थानों ने भी हिन्दी की ओर कदम बढ़ा दिए हैं। हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं पर भी ध्यान देना शुरू कर दिया है। आज सभी के प्रयासों से, यूजर्स की मांग के अनुसार हिन्दी में काम करने के लिए बहुत सारे आयाम, रास्ते हमारे खुल गए हैं, कई नवीनतम सुविधाएं आ गई हैं। आज यूनिकोड का समुचित प्रयोग-प्रचार-प्रसार दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। अपने इस लेख के माध्यम से मैं आप सभी को हिंदी और आधुनिक तकनीक के अंतर्गत उपलब्ध सुविधाओं की निम्नलिखित जानकारी से अवगत कराना चाहता हूं :-

1) यूनिकोड:- आज हम किसी भी कंप्यूटर में किसी भी भारतीय भाषा में काम करना चाहते हैं तो अब वह समस्या नहीं है जो हमें फोंट या सॉफ्टवेयर परचेज करने में आती थी। आज सभी ऑपरेटिंग सिस्टम्स में पहले से ही

इनबिल्ट यूनिकोड यानि (यूनिवर्सल एनकोडिंग सिस्टम) के माध्यम से हमारी सारी परेशानियां दूर हो गई हैं। कुछ ही सेकंड में हम अपने कंप्यूटर में किसी भी भारतीय भाषा को अपने सिस्टम को एक्टीवेट करके हम अपनी पसंद के इनस्क्रिप्ट की बोर्ड, फोनेटिक की बोर्ड और रेमिंगटन टाइपराइटर तथा गोदरेज टाइपराइटर की बोर्ड के माध्यम से बड़ी सरलता से सभी भारतीय भाषाओं में टाइप कर सकते हैं।

2) वॉयस टाइपिंग की सुविधाः- आधुनिक प्रौद्योगिकी के अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण फीचर - आज हम ज्यादातर विंडोज 10 या विंडोज 11 ऑपरेटिंग सिस्टम का उपयोग अपने कार्यालय में या व्यक्तिगत रूप से कर रहे हैं जिसके अंतर्गत आज समस्त भारतीय भाषाओं में वाणी से लेख (स्पीच टू टेक्सट) वॉयस टाइपिंग की सुविधा उपलब्ध है। विंडोज 10 या विंडोज 11 के माध्यम से मेल, एम एस वर्ड, पावर पॉइंट, एक्सेल, ई-ऑफिस आदि में एवं अन्य किसी भी बाहरी एप्लीकेशंस में बोलकर सीधे-सीधे किसी भी भारतीय भाषा में टाइप हो जाता है। इसके लिए कोई अलग से सॉफ्टवेयर खरीदने या कंप्यूटरों में इंस्टॉल करने की आवश्यकता ही नहीं है। यदि हम इस सुविधा का उपयोग करते हैं तो हमारा समय के साथ-साथ काफी पैसा भी बच सकता है और इससे हिंदी टाइपिंग में होने वाली अशुद्धियों से बचा जा सकता है।

3) अनुवाद की सुविधाः - आधुनिक प्रौद्योगिकी के अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण दूसरा फीचर - आज हम ज्यादातर एम एस ऑफिस 2007 से लेकर ऑफिस 365 तक लेटेस्ट वर्जन का उपयोग अपने निजी रूप में या अपने कार्यालय में कर रहे हैं जिसके अंतर्गत समस्त भारतीय भाषाओं में अनुवाद की सुविधा भी उपलब्ध है। एमएस वर्ड में ही किसी भी भारतीय भाषा से किसी भाषा में बड़ी सहजता से शब्दानुवाद से लेकर पूरी फाइल का अनुवाद बड़ी आसानी से कर सकते हैं हमें अलग से अनुवाद (ट्रांसलेशन) और टाइपिंग करने की आवश्यकता ही नहीं है। ऐसा करने से भी समय की बचत होती है और अनुवाद एवं टाइपिंग का कार्य बहुत ही सुगम हो जाता है।

4) की-बोर्ड्सः- कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करके इनस्क्रिप्ट या फोनेटिक की बोर्ड के माध्यम से समस्त भारतीय भाषाओं में किसी भी एप्लीकेशन में टाइप किया जा सकता है। यदि आप किसी अन्य सॉफ्टवेयर में रेंमिंगटन या गोदरेज टाइपराइटर पर टाइपिंग का काम कर रहे हैं जैसे कृतिदेव फॉन्ट आदि में तो आप यूनिकोड में भी इंडिक आईएमई की-बोर्ड डाउनलोड कर कंप्यूटरों में भी बड़ी आसानी से हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में टाइप कर सकते हैं। बस आवश्यकता है तो थोड़े से नियमित अभ्यास की।

5) टेक्स्ट टू स्पीच यानि (पाठ से वाणी) का फीचरः विंडोज 10 और विंडोज 11 ऑपरेटिंग सिस्टम्स में टेक्स्ट टू स्पीच यानि (पाठ से वाणी) की सुविधा भी उपलब्ध है। आज हमारा कंप्यूटर किसी भी भाषा में टेक्स्ट को पढ़ सकता है। यह सुविधा एमएस वर्ड में भी उपलब्ध है। हम कमांड देकर किसी महिला या किसी पुरुष की आवाज में अपने किसी भी प्रकार के टेक्स्ट को किसी की परिचय देना हो, कोई जानकारी देनी हो, डिक्टेशन देना हो, किसी प्रकार के मैटर को अपनी इच्छानुसार स्पीड में रीडिंग करवा सकते हैं और स्पिच फास्ट या स्लो भी कर सकते हैं। अब हमें केवल सुनना है पढ़ना नहीं है। यही है नई तकनीक कृत्रिम बुद्धि जिसके द्वारा बहुत कुछ संभव हो गया है जो हमें अभी तक असंभव लगता था। किसी भी मैटर को पढ़ने में जो समय लगता है वह पढ़ने का काम अब हमारा कंप्यूटर करेगा।

6) स्पैल चैकर का फीचरः- माइक्रोसॉफ्ट के किसी भी वर्जन में वर्तनी की सुविधा को यदि हम सक्रिय कर देते हैं तो हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में टाइपिंग के समय जो अशुद्धियाँ हो जाती हैं तो स्पैल चैक के माध्यम से

बड़ी सरलता से हम अपनी अशुद्धियों को भी ठीक कर सकते हैं। हिंदी में यह वर्तनी संशोधक उसी प्रकार से काम करता है जिस प्रकार से अंग्रेजी में करता है।

7) क्विक पार्ट का फीचर: एमएस वर्ड में क्विक पार्ट एक ऐसा फीचर है जिसके माध्यम से हम चंद सेकंड में अपना डॉक्यूमेंट बिना फाइल और फोल्डर में सेव किए हुए मैटर चाहे वह कितना भी बड़ा हो उसे कभी भी प्राप्त कर सकते हैं। यह हमारे दैनिक कामकाज में बहुत ही उपयोगी है। इससे काम करना बहुत आसान हो गया है। इस फीचर का उपयोग करके हम एक घंटे का काम कुछ ही सेकंड या मिनटों में कर सकते हैं। हमें मैटर को फाइल या फोल्डर में सेव करने की आवश्यकता भी नहीं है। हम वर्ड में किसी भी फाइल, टेबल्स, लैटर, मैटर, रिपोर्ट को सीधे-सीधे 1 सेकंड में ओपन कर सकते हैं। यदि इस सुविधा का उपयोग करें फाइल/फोल्डर सर्च करने में जो समय लगता है वह हमारा बहुत कीमती समय बच जाएगा और हमारा काम बहुत आसान हो जाएगा।

8) ऑटो करेक्ट का फीचर: एमएस वर्ड में क्विक पार्ट के अलावा ऑटो करेक्ट ऑप्शन का भी फीचर उपलब्ध है जिसके माध्यम से हमारे की बोर्ड के किसी भी एक कैरेक्टर अक्षर को प्रेस करने से पूरा शॉर्टकट बनाया हुआ मैटर चाहे वह हमारा लैटर हैड, रिपोर्ट या किसी भी प्रकार का डिजाइन हो एक सेकंड में डिस्प्ले हो सकता है। हमें पूरे मैटर, लेटर या रिपोर्ट को टाइप करने की आवश्यकता ही नहीं है। यह बहुत ही रोचक एवं त्वरित सुविधा हमारे सभी कंप्यूटर्स में उपलब्ध है। इस फैसिलिटी का उपयोग करके हम अपने कार्य को कम से कम समय में करके समय की बचत कर सकते हैं।

9) ट्रांसक्राइब का फीचर: यह फीचर माइक्रोसॉफ्ट के ऑफिस 365 में उपलब्ध है। इस फीचर के माध्यम के आप अपनी ऑडियो और वीडियो फाइलों को जो कि. MP3, WAV, MP4, MP4, AVI फार्मेट में होती हैं उनको आप अपने कंप्यूटर में किसी भी ड्राइव में, जहाँ भी आपने सेव करके रखी हैं उनको अपलोड कर सकते हैं। ऑडियो/वीडियो रिकॉर्डिंग को एडिट करने की भी इसमें सुविधा उपलब्ध है। यह बहुत ही उपयोगी टूल है। किसी भी मीटिंग को रिकॉर्ड करके उसके मिनट बनाने में बहुत आसानी हो जाती है क्योंकि मीटिंग के उपरांत मिनिट तो बनाने ही होते हैं तो यह फीचर रिकॉर्डिंग को टेक्स्ट में कन्वर्ट कर देता है इसलिए टाइप करने की आवश्यकता ही नहीं है। हमारा काम बहुत ही आसान हो जाता है। इसमें स्पीकर का फीचर भी उपलब्ध है। टेक्स्ट के साथ हम वक्ता को भी आसानी से पहचान कर सकते हैं क्योंकि रिकॉर्डिंग उसी वक्ता की आवाज में होती है । इसके लिए हमें अपने कंप्यूटर में अलग से किसी भी प्रकार का कोई भी सॉफ़्टवेयर डाउनलोड/इंस्टॉल करने की आवश्यकता ही नहीं है। यदि हम मैनुअली किसी भी मीटिंग के पॉइंट को नोट करते हैं तो हमारा काफी समय नोट लिखने एवं नोट को टाइप करने में ही चला जाता है और मीटिंग में हुई पूरी कार्यवाही को नोट भी नहीं कर पाते हैं। अब हमें इस सुविधा का उपयोग करके अलग से इस प्रकार का कुछ भी करने की आवश्यकता ही नहीं है।

10) भारत सरकार द्वारा विकसित किए गए सॉफ्टवेयर्स में लीला राजभाषा, कंठस्थ-2.0, अनुवादिनी, भाषिनी आदि इतने पावरफुल सॉफ्टवेयर्स हैं कि किसी अन्य सॉफ्टवेयर्स की आवश्यकता ही नहीं है।

11) चैट जीपीटी, को-पायलट, डीपसीक, जैमिनी आदि एआई टूल्स के माध्यम से हम किसी भी विषय पर चंद मिनटों में लेख या जानकारी टेक्स्ट फार्मेट में प्राप्त कर सकते हैं। यह कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस) का सबसे अधिक और उपयोगी फीचर है। जो कि एक आदमी की तरह सोचता है, लिखता है। इस एआई तकनीक ने दुनिया में एक क्रांति पैदा कर दी है। कई लोगों को इससे लाभ हो रहा है। हमें बस अपना सवाल लिखना है

और जवाब कुछ ही सेकंडो में हमारे सामने टाइप होकर आ जाता है। इसमें यह सुविधा भी उपलब्ध है कि हमें यदि कोई जानकारी, कविता, कहानी, लेख पसंद नहीं आया तो इसे री-जनरेट भी कर सकते हैं। यदि हम चाहें तो जो सवाल हमने कंप्यूटर से पूछा है उसका सटीक अनुवाद हम जिस भाषा में प्राप्त करना चाहें उस भाषा में तुरंत मिल जाता है। ऐसा करने से हमें अलग से अनुवाद करने और टाइप करने की भी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है। इन सभी एआई टूल्स में भरपूर मात्रा में खूबियाँ उपलब्ध हैं। यानी कह सकते हैं कि इनके माध्यम से हम अपना कोई भी काम, जिसकी जानकारी नहीं है बड़ी आसानी के प्राप्त कर सकते हैं।

12) मोबाइल: आप अपने मोबाइल में अपनी भाषा में, अपने देश की राजभाषा में काम करें। मान लीजिएः हमें एस एम एस, व्हॉस्टअॅप, फेसबुक के द्वारा या अन्य किसी और माध्यम से कोई भी जरूरी संदेश भेजना हो और हमें कुछ भी टाइप करना नहीं आता हो तो आप मोबाइल में उपलब्ध सभी एप्लीकेशनों में ऑफलाइन / ऑनलाइन अपनी भाषा में बोलकर के टाइप कर सकते हैं, गलतियों को बोलकर ही एडिट कर सकते हैं, शॉर्टकट बना सकते हैं, अनुवाद कर सकते हैं, किसी के बारे में, किसी भी प्रकार की जानकारी सर्च कर सकते हैं और सबसे मजेदार बात यह है कि जो भी आप मोबाइल में डिक्टेट कर रहे हैं वह यूनिकोड में आउटपुट देता है इसलिए अपना सारा काम अपनी भाषा में कर सकते हैं। अपनी फाइल को ट्रांसफर कर सकते हैं। हमारा मोबाइल अब केवल बात करने तक ही सीमित नहीं रह गया है वह हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है।

अंत में मैं यही कहना चाहता हूं कि आज जमाना बदल गया है। काम करने के तौर-तरीके बदल गए हैं, हरेक को अपनी मंजिल पर पहुंचने की बहुत जल्दी है, ऐसा लगता है कि दुनिया सिमट सी गई है। हमारी चाहत के अनुसार सभी सुविधाओं तक हमारी पहुंच बहुत आसान हो गई है। हम देख रहे हैं कि समय के बदलाव के साथ-साथ नित नई-नई तकनीकें आ रही हैं। हम अपने दूसरे सहकर्मियों के ऊपर कब तक निर्भर रहेंगे। आज प्रौद्योगिकी के जमाने में हमें अपने आपको बदलने की अत्यंत आवश्यकता है। समय रहते इस आधुनिक तकनीक को हमने नहीं अपनाया तो हम इस क्षेत्र में काफी पिछड़ जाएंगे। इसलिए हमें आत्मनिर्भर बनना है, नई तकनीक को अपनाना है और हर किसी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर साथ में चलना है। हमें अपनी पुरानी सोच को बदलना है। मुझे तो ऐसा लगता है कि आने वाले भविष्य में जीवन की राह और भी आसान हो जाएगी।

अतः आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हम सभी इस आधुनिक तकनीक का उपयोग अवश्य करेंगे और अपनी भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाएंगे।

धन्यवाद। जय हिंद

राजेन्द्र प्रसाद वर्मा
उप निदेशक
हिंदी शिक्षण योजना, नवी मुंबई

भारतीय संस्कृति और लोक परंपराएँ

विविधता भारतीय संस्कृति की परिचायक है और भारतीय संस्कृति लोक जीवन का पर्याय है। कितने ही प्रदेश, क्षेत्र, बोलियों और कितने ही धर्म-जाति-समुदाय के लोग अपने समाज की परंपराओं को संरक्षित रखने की कोशिश में जूझ रहे हैं क्योंकि वर्तमान में भारतीय संस्कृति में व्यापक परिवर्तन देखा गया है जिसका कारण पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण है और भारतीय सस्कृति ने आज एक मिश्रित संस्कृति का नया रूप धारण कर नए आयाम विकसित किए हैं। ऐसे में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति की लोक परंपराओं का सरंक्षण निश्चित ही चितनीय विषय है क्योंकि संस्कृति के मूलाधार तत्वों में व्यक्ति के आचार-विचार, व्यवहार, वेशभूषा, रीति-नीति, परंपरा और जीवन मूल्य शामिल होते हैं जो जीवन के सभी महत्वपूर्ण तत्वों को अंगीकार कर एक सांस्कृतिक आवरण की रचना करते हैं। इस परिवेश में जन-जन की सहभागिता से सांस्कृतिक संपदा निर्मित होती है जो किसी व्यक्ति, धर्म, जाति, समूह अथवा वर्ग की संपत्ति नहीं होती वरन सामूहिक विचारों का, भावनाओं का समावेश होता है जो उस प्रदेश अथवा राष्ट्र की सांस्कृतिक सपदा को समृद्ध करती है जो मानव के उत्तम आचरण की अभिव्यक्ति है जिसमें उस देश अथवा राष्ट्र की आत्मा बसती है। कहा जा सकता है कि लोक मानस की विविध रूपों में अभिव्यंजना उसी संस्कृति का विस्तार करती है। यहाँ तक कि ग्रामीण संस्कृति से निकली हुई लोक परंपराएँ भारतीय जनमानस में गहरी पैठ लगाए हुए हैं। जहाँ भी उनकी गूंज सुनाई देती है वहाँ तन-मन झूम उठता है, लोकगीत हो या लोक नृत्य, लोकनाट्य हो अथवा लोक संगीत लोकगाथाओं का रूप हो अथवा कला, उनकी खुशबू चारों और महक ही उठती है। जीवन का हर अहसास उनमें जिया जाता रहा है। घर में किसी के जन्म से लेकर खेतों में फसल कटाई, शादी ब्याह में नोंक झोंक हो, घर पर कोई सस्कार किया अथवा कोई तीज-त्योहार, मनोरंजन या विश्वास-अंधविश्वास सर्वत्र लोकाचार का आनंद मिल ही जाता है। कहीं किसी खास मौके का इंतजार नहीं, बस एक सहजता में ही इनकी खुशबू बिखरती चली जाती है। लोकगीतों और लोक परंपराओं के रूप में जीवन के पग-पग पर भावनाओं की, हृदय की, संवेदना की, क्षमता की, मर्यादा की और सस्कारों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है जो विभिन्न रूपों में पीढ़ी दर पीढ़ी, नदी की धारा की तरह निरंतर प्रवाहित होती रहती है। वस्तुतः सभी लोक परंपराओं की अपनी अपनी विशेषता है जो किसी काल में सिमटी नहीं है। उनमें बोध है, चेतना है, सृजनात्मकता है. कलात्मकता है, संवेदनशीलता है, गहराई है, व्यंग्य है, आस्था और विश्वास भाव है तो लौकिक अलौकिकता का संगम भी है।निश्चित रूप से उनमें जन साधारण की सहजता का, स्वाभाविकता का चित्रण है, सामाजिकता की ओर उन्मुख प्रवृत्ति है, उत्साह का संचार है, विविधता में एकता का बहाव है, नव रसों का सार है, ग्रामीण परिवेश की झलक है तथा रस्मों रिवाजों और मांगलिक कार्यों का मंगलाचार है। ये लोकगीत सांस्कृतिक विरासत की प्रस्तुति हैं जिनकी पृष्ठभूमि का चित्र लोकजीवन में दिखाई देता है जो कि किसी भी बंधन से परे है, उन्मुक्त है और सहज है। लोकाचार में सामूहिक ऊर्जा की परिणति होती है, वैयक्तिक तथा सामूहिक अभिव्यक्ति होती हैं, परंपराओं का पालन होता है, संस्कारों का समावेश होता है। लोकगीतों की बात करें तो इनकी अभिव्यक्ति अंतस की गहराई से निकलती हैं जिनमें कोई नियम नहीं होता परंतु लोक भाषा के कारण ये जन-जन तक अपनी पहुँच स्वतः ही बना लेते हैं। जीवन के हर रूप का हिस्सा बनकर ये लोकगीत जन मानस में अपनी ऐसी छाप छोड़ जाते हैं कि उनका रोम-रोम उसमें आसक्त हो जाता है। लोकगीत तो जीवन को स्वाभाविकता देते हैं

और किसी भी बंधन से मुक्त होकर पलते हैं जो किसी भी कृत्रिमता या बनावट से बहुत परे है। लोकगीत सामूहिक जीवन की लहर है, लोकाचार का संगीत है, जीवन के हर आचरण से निर्मित है जो जन सामान्य की अमूल्य धरोहर है। ऐसे में इन लोक परंपराओं का सरंक्षण आज के समय की महत्ती आवश्यकता है ताकि भारतीय संस्कृति की धरोहर को हमेशा के लिए सहेज कर रखा जा सके।

डॉ. अंजू शर्मा
कवयित्री एवं समीक्षक
बेलापुर, नवी मुंबई



कार्य और जीवन में संतुलनः एक महत्वपूर्ण आवश्यकता

आज की तेज़-रफ़्तार ज़िंदगी में, जहाँ काम का दबाव और ज़िम्मेदारियाँ बढ़ती जा रही हैं, कार्य और जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन गया है। चाहे वह ऑफिस का काम हो या घर की ज़िम्मेदारियाँ, दोनों को सफलतापूर्वक निभाना आसान नहीं है। इस लेख में, हम इस संतुलन को बनाए रखने के महत्व और इसे हासिल करने के उपायों पर चर्चा करेंगे।

कार्य-जीवन संतुलन का महत्व

जब हम अपने काम और निजी जीवन में संतुलन नहीं बना पाते, तो इसका सीधा असर हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। अत्यधिक काम का दबाव न केवल तनाव और चिंता को बढ़ाता है, बल्कि हमारे पारिवारिक और सामाजिक संबंधों पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। इसके विपरीत, जब हम संतुलन में रहते हैं, तो हम न केवल अपने काम में अधिक उत्पादक हो पाते हैं, बल्कि अपने परिवार के साथ भी गुणवत्तापूर्ण समय बिता सकते हैं।

संतुलन कैसे प्राप्त करें ?

1. प्राथमिकताएं तय करें

सबसे पहले, अपने कार्य और निजी जीवन की प्राथमिकताओं को समझना बहुत ज़रूरी है। कौन से काम तत्काल ज़रूरी हैं, और कौन से काम थोड़े समय के लिए टाले जा सकते हैं, यह पहचानें। इससे आप अपने दिन को बेहतर तरीके से प्रबंधित कर सकते हैं।

2. समय प्रबंधन में सुधार करें

समय का सही प्रबंधन कार्य और जीवन में संतुलन बनाने की दिशा में पहला कदम है। इसके लिए एक कार्य सूची (To-Do List) बनाएं और उसे प्राथमिकता के अनुसार पूरा करने की कोशिश करें। दिन के कुछ घंटे परिवार और दोस्तों के लिए भी निर्धारित करें।

3. डिजिटल डिटॉक्स अपनाएं

आजकल डिजिटल डिवाइसेस का अत्यधिक उपयोग भी संतुलन में बाधा बन सकता है। काम के बाद मोबाइल या लैपटॉप से कुछ समय के लिए दूरी बनाएं। यह कदम आपको मानसिक रूप से तरोताजा रखेगा और आपको परिवार के साथ अधिक समय बिताने का अवसर देगा।

4. "ना" कहने की आदत डालें

हम में से कई लोग दूसरों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अतिरिक्त काम ले लेते हैं, जो हमारे संतुलन को बिगाड़ सकता है। इसलिए, अपनी क्षमता और समय का ध्यान रखते हुए "ना" कहना सीखें। इससे न केवल आपका काम प्रभावी होगा, बल्कि तनाव भी कम होगा।

5. शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें

संतुलित जीवन के लिए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी बहुत ज़रूरी है। नियमित व्यायाम, स्वस्थ आहार और ध्यान जैसी गतिविधियाँ आपको काम के दबाव से उबरने में मदद करती हैं और ऊर्जा बनाए रखती हैं।

निष्कर्ष

कार्य और जीवन में संतुलन बनाए रखना आज के समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसके बिना न केवल हमारे पेशेवर जीवन में समस्याएं आ सकती हैं, बल्कि हमारे व्यक्तिगत जीवन में भी असंतोष उत्पन्न हो सकता है। संतुलन बनाए रखना एक सतत प्रक्रिया है और इसके लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। उचित प्राथमिकताएं, समय प्रबंधन, और स्वस्थ आदतों के साथ हम इस संतुलन को हासिल कर सकते हैं और एक खुशहाल, संतुलित जीवन जी सकते हैं।

अनूप अब्राहम
सहायक महा प्रबंधक (सर्तकता)
भा. क. नि. मुख्यालय



पुष्प

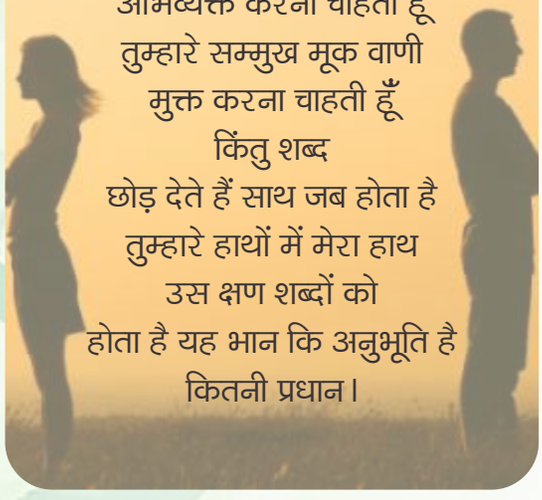
पुष्प!
तुम हो कितने उदार
जिधर भी मोड़ो मुड़ जाते हो
जिधर भी झुकाओ
झुक जाते हो
सर्वत्र अपनी सुगंध लुटाते हो
अपना सौंदर्य बिखेरते हो
पर साथ में एक संदेश भी देते हो
विषम परिस्थिति में भी
मुस्कुराना चाहिए आवश्यकता पड़ने
पर झुकना भी चाहिए
परंतु कोई
आवश्यकता से अधिक न सताए
इसके लिए कंटक भी
साथ रखना चाहिए।

जीवन

अत्यल्प अपितु सुंदर
व्याप्त मौन
विस्तृत, शांत, अनिंद्य चीड़ शिखरों से
झाँक रही
रश्मियों की पंचक किरणें कहीं कार्य का
निष्फल होना
कभी किसी की व्यर्थ भर्त्सना का
शिकार होना
कुछ सुजनों का लघुकालिक सहयोग
मेरी कविता के
अमिट गुंजित स्वर सुरभि की स्निग्ध
मधुरता के साथ-साथ अंतहीन उद्वेग-द्वंद
जानते हो!
यही है जीवन।



तुम्हारे समक्ष



तुम्हारे समक्ष स्वयं को
अभिव्यक्त करना चाहती हूँ
तुम्हारे सम्मुख मूक वाणी
मुक्त करना चाहती हूँ
किंतु शब्द
छोड़ देते हैं साथ जब होता है
तुम्हारे हाथों में मेरा हाथ
उस क्षण शब्दों को
होता है यह भान कि अनुभूति है
कितनी प्रधान।

प्रेम

यदि प्रेम का शब्दों से है
सरोकार और यह है
वाणी का व्यापार
तो दे डालो इसे एक परिभाषा
पूर्ण कर लो अपनी अभिलाषा,
जानते हो!
व्यर्थ ना जाएगा
तुम्हारा परिश्रम हाँ,
टूट जाएगा भ्रम
कि प्रेम हो सकता है परिभाषित
संवेदनाएँ हो सकती हैं उद्भाषित।

डॉ. राखी सिंह कटियार
सुप्रसिध्द हिंदी कवयित्री
वड़ोदरा (गुजरात)

मेरे पापा

बचपन में आपके साये में बेफिक्र उंगली पकड़कर चलता था,
कंधे पर बैठकर आपके, दुनिया मुट्ठीं में ऐसे अकड़ता था।

मजबूती की नीव पर टिकाये है आपने मेरे पाँव,
निराशा की धूप में आपने हमेशा मुझे दी है उम्मीद की छाँव।

दूनिया में जो आज मेरी इतनी शौहरत और इज्जत है,
मेरे पापा वो सब आपकी ही बदौलत है।

नसीब वाले है वो जिनके सिर पर पिता का हाथ है,
होती है जिद्द सभी पूरी क्योंकि उनके पिता का साथ है।

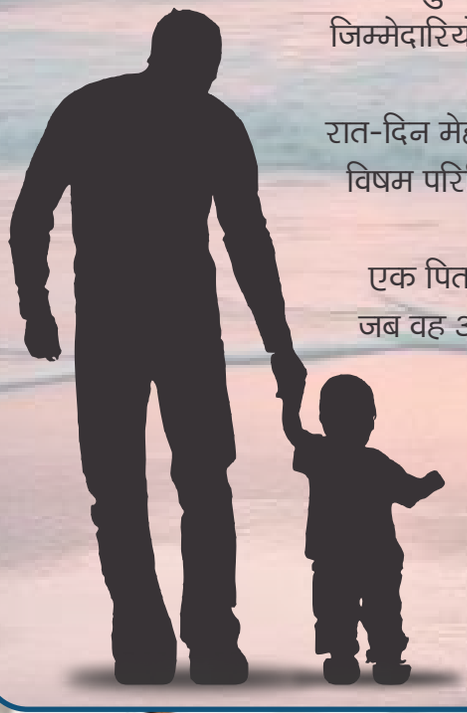
ये आपके ही संघर्ष थे जो मैं कुछ बन पाया हूँ,
मैं जैसा हूँ, जो भी हूँ बस आपकी ही छाया हूँ।

मुझमें भाव समर्पण का आपसे ही आया है,
जीने का सलीखा मुझे, आपने ही सिखलाया है।

अच्छे-बुरे का भेद करना पापा, आपने ही समझाया है,
जिम्मेदारियों को हँसकर उठाना, मुझे आपसे ही आया है।

रात-दिन मेहनत करके, आपने खुशियों का पौधा बोया है,
विषम परिस्थितियों में भी, हमारे ख्वाबों को संजोया है।

एक पिता के जीवन का संघर्ष तभी समझ आता है,
जब वह अपने आप को स्वयं पिता के रूप में पाता है।



मोहित कुमार
अस्थायी कर्मचारी
भा. क. नि. शाखा कार्यालय-भटिंडा

कपास की यात्रा

किसान की मेहनत से, शुरू होती खेतों से कहानी,
काले बादलों में छिपी, बर्फ सी चमकती रुई की निशानी।
खेतों में खिलती, सफेद सोना सा चमचमाती,
धूप की गर्मी में, किसान की मेहनत रंग लाती।

पकने पर जब आती, छीने को तैयार,
हल्की-फुल्की रुई, जैसे बादलों का प्यार।
चुगाई के बाद में, हाथों में सजी,
साफ-सुथरी रुई, हर दिल में बसी।

गुणवत्ता की परीक्षा, फिर औटाई व दबाई,
कपास की महक से, फिर होती कताई।
कताई का समय आए, जब खुशियों का मेला,
कपास की महक से, फिर होती कताई।

कताई का समय आए, जब खुशियों का मेला,
नर्म नर्म स्पर्श, जासे बादलों का खेला।
गाँधी जी ने भी कपास से कताई करना सिखाया,
खादी पहने स्वदेशी अपनाये, इसका पाठ पढ़ाया।

कताई के बाद, सूत से होती कपड़ो की बुनाई,
कपड़ों में ढलती, बन वस्त्र बाजार में रिझाने आई।
हर चरण में मेहनत, हर धागे में जान,
कपास और खादी का हो रहा सम्मान।

हो रहा चहुं ओर विकास
गर्व है कि हर लिवास में है कपास।
आइए, हम सब मिलकर, इस यात्रा का उत्सव मनाएं,
वस्त्र के विकास में, कपास का नाम बढ़ाएं।

ए. शिखा
सहायक(लेखा)
भा. क. नि. शाखा कार्यालय-भटिंडा

किसान

फसल को जब उगाता है, देश का किसान।
कपास की मांगों को पूरा करता है, जब किसान !

गर्मी हो बरसात हो कभी वो रुकता नही।
पसीना खूब बहाता है, देश का किसान।
लोगो की भूख को मिटाता है किसान।।

फसल को जब उगाता है, देश का किसान।
हाथों की इन लकीरो से कुछ नहीं होता।

अपनी किस्मत खुद बनाता है किसान।।
फसल को जब उगाता है, देश का किसान।
जो देता है, खुशहाली जिसके दम पर हरियाली।

में भूल नहीं सकता उसके उपकार।
फसल को जब उगाता है, देश का किसान।

नीरज कुमार
कनि. सहायक (सा)
भा. क. नि. शाखा कार्यालय-वारंगल

कपास न होता तो जीवन कैसा होता !

कपास न होता तो जीवन कैसा होता ।
न होता वो तौलिया जो स्नान उपरांत आपको पोंछता है।
न होती वो आपकी पसंदीदा शर्ट, जींस जिसे पहनकर आप नित्य काम पर जाते हैं।
न होता यह शोषक डायपर जो आपके बच्चे को आरामदायक रखता है ।
न होती वो चादर जिसमें आप दिन भर की थकान के बाद सरक जाते हैं।
न होता वो तकिया जो मीठे सपनों के लिए आपके सर को सहारा देता है।
न होता वो कम्बल जो कड़कती ठंड में आपको बचाता है।
न होता वो बिनौला जो पशुओं के पोषण में काम आता है।
जरा सोच के देखिये कपास न होता तो जीवन कैसा होता ।

विभा शर्मा
क. वाणि. कार्यकारी
भा. क. नि. शाखा कार्यालय-श्रीगंगानगर

प्रश्न

तुम ना कोई संत जहाँ के, ना कोई कोई भगवान हो तुम,
गीदड़ जैसे नोचे काटे, छी कैसे इंसान हो तुम ।

हरपल होते चीर हरन और हर नारी यहाँ सीता है,
हो सतयुग या कलयुग हो, अग्नि ही लेती परीक्षा हैं।

चुप्पी साधे बैठे हो तुम, बेटी थी तो जला दिया,
कर्म-कांडो को छुपा के अपने इतिहास को भुला दिया।

लाठी भी तुम चलाओ अपनी, जुबान यहाँ तुम काट रहे,
विश्वगुरू तुम ऐसे कैसे बस नफरत जो बाँट रहे।

हरपल हरएक खौफ में जीता, झूठा अभिमान पाल रहा,
नस्ल हमारी कितनी बेहतर, कूडे में खंगाल रहा।

अब भी कुछ ना सोचू समझू, ये कैसी पहचान मेरी,
खुद से खुद को प्रश्न यह पुँछू क्या सच में इंसान हूँ मैं।

हर्षदीप सपकाले
प्रबंधन प्रशिक्षु
भा. क. नि. शाखा कार्यालय-अकोला



माँ काफी है

इसी एक लफ्ज से मोहब्बत का बया काफी हैं,
मुक्कमल है यही एक हर्ष, माँ काफी है।

मेरे खिलाफ हो सारी दुनिया मेरे साथ माँ तेरा होना काफी है,
नकारा समझे जमाना मुझको,जब त्याग दे सब।

फिर माँ तेरी बाहों का साया सहारा काफी है,
हो चाहे लाख हलचल मेरे अन्दर।

सुलाने को मुझे तेरी लोरिया काफी है,
मैं मुझसे भागता हूँ आँखे मीचकर अपनी।

मुझे सुंदर बनाने को तेरी आँखों का आईना काफी हैं,
जमाने भर का जायका, होटलो की नुमाईयाँ सब कुछ फिका है।

तुम्हारे हाथ की दो रोटियाँ काफी है,
मेरी कोशिश से जीत मिलेगी मुझको कोई मानहानि नहीं है।

मगर तेरा कहना माँ तेरी एक हाँ ही काफी हैं,
बहुत कुछ लिख नहीं सकता, बहुत कुछ कह नहीं सकता।

बहुत कुछ अब भी बाकी हैं
इसी एक लफ्ज से मोहब्बत का बयां काफी है
मुक्कमल है यही एक हर्ष, माँ काफी है।



रवि कुमार चक्रवर्ती
कनि.सहायक
भा. क. नि. शाखा कार्यालय-कोलकता

कामकाजी महिला

सपनों की उड़ान, हिम्मत की राह,
रोज़ की चुनौतियों से नहीं है वो डरी।
कामकाजी महिला, होशियार और निडर,
अपनी मेहनत से हर बाधा पर भारी।

घर की जिम्मेदारियां, ऑफिस की ड्यूटी,
दोनों में संतुलन, उसकी सच्ची ब्यूटी।
आगे बढ़ने की चाह, आँखों में जोश,
हर कदम में ताकत, हर पल में होश।

हर दिन नई रौशनी लिए संग चलती है,
सपनों की लौ को हरदम जलाती है।
हिम्मत से हर मुश्किल को हराती है,
कामकाजी नारी जग में अपनी पहचान चमकाती है।

आदर और सम्मान उसकी है धरोहर,
क्योंकि वो ही है समाज का असली जेवर।
नारी का सम्मान, हर चेहरे की पहचान,
वो आगे बढ़े, करे दुनिया को आसान।

हर काम में उसकी मेहनत, अनकही कहानियाँ,
साहस और समर्पण की हैं वो असली निशानियाँ।
हर मंजिल उसकी, अपनी मेहनत से है पाई,
कामकाजी महिला है समाज की सच्ची माई।



कमल कान्त
महाप्रबंधक (अंभनि)
भा. क. नि. मुख्यालय

जिदंगी मुस्कुराने लगी

जिदंगी मुस्कुराने लगी,
जब भी हम बिखरने लगे,
उन्होने सवारना चाहा
और जब हम सवरने लगे
उन्होंने हमें निखारना चाहा
जिंदगी मुस्कराने लगी,

जब भी हम दुखी हुए तो साहस मिला उनका
हर तकलीफ में मुस्कुराने का एहसास मिला उनका,
तो जिंदगी मुस्कराने लगी।

माँ कहते है हम उन्हें
हमें सारा प्यार मिला उनका,
पिता कहते हैं हम उन्हें
हमें सारा प्यार मिला उनका,
पिता कहते हैं हम उन्हें
संस्कार मिला उनका और नाम मिला उनका,
तो जिंदगी मुस्कराने लगी

यूं तो हम लिख नहीं सकते
उनसे मिले जज्बातों को,
बस उनके प्यार के साथ जिंदगी मुस्कराने लगी।

ललित कुमार
कनिष्ठ सहायक (लेखा)
भा. क. नि. शाखा कार्यालय-वारंगल

दिन जल्दी जल्दी ढ़लता है

दिन जल्दी-जल्दी ढ़लता है।
हो जाय न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं
यह सोच थका दिन का पंछी भी जल्दी-जल्दी चलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढ़लता है।

बच्चे प्रत्याशा में होगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परो में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढ़लता है।

मुझसे मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊँ किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विहलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढ़लता है।

वैभव रघुनाथ इंगले
कनि. सहायक (सामान्य)
भा. क. नि. शाखा कार्यालय-हुबली

मेरी इच्छा है कि मैं कपास बन जाऊं

मेरी इच्छा है कि मैं कपास बन जाऊं,
कि सर्व समाहित करना व्यक्तित्व हो और, तत्पर रहूं अश्रु को पोंछने को सदा,
कि बन सकूं जो बनाना चाहो मुझे, रक्षा का धागा भी, और मर्यादा का वस्त्र भी,
कि वृहद रूप में भी, अहम नहीं हो मुझ में किंचित, हल्का रहूं सदा, कि नहीं बनूं बोझ किसी पर,
यदि क्षणिक ताप से जल भी जाऊं, तब भी प्रकाशमान कर दूं किसी के जीवन को

वीरेन्द्र सिंह कार्की
एमटीएस
भा. क. नि. शाखा कार्यालय-श्रीगंगानगर

तुम-सा सदियों के बाद कहीं फिर आएगा

गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गाएगा,
तुम-सा सदियों के बाद कहीं फिर आएगा,
पर जिन आदर्शों को लेकर तुम जिए-मरे,
कितना उनको
कल का भारत
अपनाएगा ?

बाएं था सागर औ दाएं था दावानल,
तुम चले बीच दोनों के, साधक, सम्हल सम्हल,
तुम खड्गधार-सा पंथ प्रेम का छोड़ गये,
लेकिन उस पर
पावों को कौन
बढ़ाएगा ?

जो पहन चुनौती पशुता को दी थी तुमने,
जो पहन दनुजता से कुश्ती ली थी तुमने,
तुम मानवता का महा कवच तो छोड़ गये,
लेकिन उसके
बोझे को कौन
उठाएगा ?

शासन-सम्राट डरे जिसकी टंकारों से,
घबराई फिरकेवारी जिसके चारों से,
तुम सत्य-अहिंसा का अजगव तो छोड़ गये,
लेकिन उसपर प्रत्यंचा कौन चढ़ाएगा ?



श्री हरिवंशराय बच्चन

राष्ट्रीय एकता तथा विश्व बंधुत्व का संदेश वाहक

नारी

पुरुष हृदय-हीन,
मानुष करिते नारी दिल तारे आधेक हृदय-ऋण।
पुरुष हृदय न था, नारी ने उसे आधा हृदय देकर मनुष्य बनाया।

(बँगला) -
काजी नजरुल इस्लाम (कवि-श्रीमाला, पृ. 52)

वर्णिते ना चाइ हृद नदी सरोवर
सिंधु शैल वन उपवन,
निर्मल निर्झर, मरु वालुर सागर,
शीत-ग्रीष्म-वसंत वर्तन।
हृदये जेगछे तान,
पुलके आकुल प्राण
गावो गीत खुली हृदि - द्वार
महीयसी महिमा मोहिनी महिलार।

मैं झील, नजी, तालाब, सिंधु, पहाड, वन-उपवन, निर्मल झरना, बालू के सागर, मरुभूमि या शीत, ग्रीष्म या वसंत ऋतु के परावर्तन का वर्णन नहीं करना चाहता। मेरे तो हृदय में ताव जगी है, प्राण पुलकित हो रहा है, इसलिए मैं हृदय का द्वार खोलकर मोहिनी महिला की महीयसी महिमा गाऊँगा।

(बँगला)
सुरेंद्रनाथ मजुमदार

तुम शारदीय जोन
जोहकी अमिया बाकि
विषाद डावरबोर दिया आँतराइ,
दुखीयार पँजा धर
शांति निकेतन हय
तोमार हियार पुण्य परशन पाइ।

तुम वही शरद्कालीन अमृतमयी ज्योत्स्ना हो, जो विषाद की घन घटाओं को दूर करती है। तुम्हारे हृदय के पुण्य स्पर्श मात्र से दरिद्र की कुटिया शांति-निकेतन बन जाती है।

(असमिया)
नलिनीबाला देवी (कवि श्रीमाला, पृ. 68)

तोमार दुखनि हाते
मुचि दिये जगतर
स्वार्थमय धरणीर कलुष कलिमा
प्रेमर प्रदीप ज्वालि

कर्तव्यर तपस्यारे संसार पथत निते बिलोबा गरिमा ।
तुम्हारे हाथ स्वार्थमयी पृथ्वी की कलुष-कलिमा पोंछ देते है। प्रेम के दीप जलाकर, कर्तव्य की तपस्या से तुम संसार-पथ में गरिमा का वितरण करती हो।

(असमिया) नलिनीबाला देवी
(कवि-श्रीमाला, पृ.68)

तोमार परशे नारी
पृथिबीये पाले रुप
पाले सुधा-रसर परश
जीवन कुसुम बेरि
गुंजरिले कबिकुले
विकशिल काब्यर सुरस।

हे नारी! तुम्हारे स्पर्श से ही पृथ्वी को रुप मिला है और सुधा-रस का स्पर्श मिला है! जीवन-कुसुम को परिवेष्टित कर कवियों ने विश्व गुँजा दिया जिससे काव्य का सुरस विकसित हो उठा।

(असमिया) - नलिनीबाला देवी
(कवि-श्रीमाला, पृ. 100)

राष्ट्रीय एकता तथा विश्व बंधुत्व का संदेश वाहक

प्रिया तुमि आदि मानवर
मातृ तुमि विश्व जगतर
रुप दिया संजीवनी
अमृत पियाइ
मातृत्व मधुरे ढालि
प्रेरणार अनुभुति
जातिक जीयाइ राखा
निज प्राण बिलाइ बिलाइ ।

तुम आदि मानव की प्रिया हो। तुम संपूर्ण जगत की माता हो। संजीवनी अमृत पिलाकर तुम रूप देती हो। तुम प्रेरणा की अनुभूति, मधुर मातृत्व में ढालकर अपने प्राण न्योछावर कर जाति को जीवित रखती हो।

(असमिया) -
नलिनीबाला देवी (कवि-श्रीमाला, पृ. १०२)

❁

जगते बिचरा नाइ
तोमार बाहुर शक्ति
बिचारिछे नीरव आश्वास
सुकुमार हृदयर
शक्ति उत्स नीरव विश्वास।

विश्व तुम्हारा बाहुबल नहीं, बल्कि नीरव आश्वासन और सुकुमार हृदय की शक्ति का निर्झर विश्वास ही चाहता है।

(असमिया)
नलिनीबाला देवी (कवि-श्रीबाला, पृ. १०२)

भारतीये बिचारिछे
अतीतर नारी रत्न
सत्यर पवित्र ज्योति
चरित्रर अहिमा महान।

तुममें भारती अतीत का नारी-रत्न खोज रही है, जिसमें सत्य की पवित्र, ज्योति, चरित्र की महान महिमा प्रकाशित है।

(असामिया)
- नलिनीबाला देवी (कवि-श्रीबाला, पृ. १०२)

❁

अबलानो अवतार ने पराधीन ।
आबला-जन्म ही पराधीन है।
(गुजराती)
- दयाराम (ठप्रेमनी पीड़ाठ कविता)

❁

कांच-बाहिली समान जपणें कां प्रीत तरी ?
आपुलिया सारखेच करणे ही प्रीत खरी !
मग अपुल्यासारखीच करणी थ्या श्रमजीवी
गेह नव्हे दोहारा, गृहिणी मी, नच देवी।

क्या प्रीति का लक्षण यही है कि पुरुष स्त्री को काँच की गुड़िया के समान संभाल कर रखे? वस्तुतः अपने जैसा ही उसे बनाना सच्चे प्रेम का लक्षण है। इसलिए मुझे अपने जैसा ही श्रमजीवी बना लो क्योंकि घर मंदिर नहीं है और मैं गृहिणी हूँ, देवी नहीं।

(मराठी) - यशवंत दिनकर पेंढरकर
(कविता गृहिणी मी नच देवी)

❁

स्त्री जूचिनरुडु चित्तंबु निलकड
चेयलेक तानु चेडुनु गादे
एटिकट्टम्रान देंदाक निलुचुनु ।

युबतियों को देखने पर पुरुष का मन उसके हाथ से निकल जाता है और वह भ्रष्ट हो जाता है। नदी के तट पर खड़ा वृक्ष कब तक ठहर सकता है?

(तेलुगु) - वेमना

❁

घर की दीवारों में स्त्री को मर्यादित रखना किस काम का? वास्तविक मर्यादा तो उसका सतीत्व ही है।

- तिरिवल्लुवर (तिरुक्कुरल ५७)

सेवानिवृत्ति

दिनांक 01.10.2024 से 31.03.2025 के दौरान निम्नलिखित अधिकारी एवं कर्मचारी निगम से सेवानिवृत्ति हुए, सीसीआई परिवार की ओर से उनके सुखद भावी जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

श्रीगंगानगर		
1.	श्री रेवत प्रकाश चौधरी, वरिष्ठ सहायक	31.12.2024
मुख्यालय		
2.	श्री एम एल कांबले, एम टी एस,	31.01.2025
अहमदाबाद		
3.	श्री तिलोकाराम पारेगी, वरि. वाणिज्यिक अधिकारी	28.02.2025
हुबली		
4.	श्री ईश्वर लक्ष्मणराव ओतारी, अनुभाग अधिकारी	28.02.2025
रायगढ़ा		
5.	श्री गोरेलाल, एम टी एस	31.03.2025





रघुवीर सहाय

एक कवि, लेखक, पत्रकार और अनुवादक

जन्म : 09 दिसंबर 1929, लखनऊ, उत्तरप्रदेश

निधन : 30 दिसंबर 1990

रचनाएं: वे दिन, लाल टीन की छत रात का रिपोर्टर (उपन्यास), परिन्दे, जलती झाड़ी, (कहानी), चीड़ों पर चाँदनी, हर बारिश में, धुंध से उठती धुन ।

साहित्य काल – आधुनिक काल

रचनाएं – दूसरा सप्तक, सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो, हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गये हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ, एक समय था

पुरस्कार- सन् 1984 में साहित्य अकादमी पुरस्कार

भा.क.नि.
CCI

भारतीय कपास निगम लिमिटेड

एक मिनी रत्न कंपनी
(भारत सरकार का उपक्रम)
कपास भवन, प्लॉट नं. 3 A सेक्टर 10,
सी.बी.डी. बेलापुर, नवी मुम्बई - 400 614, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : 022-27579217 फैक्स : 022-27576030

सत्यमेव जयते

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
उद्योग भवन, नई दिल्ली - 110 011
www.ministryoftextiles.gov.in

"राजभाषा रश्मि" छमाही पत्रिका का प्रकाशन ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारतीय कपास निगम लिमिटेड, नवी मुंबई - 400 614